Drishtikon
(UGC Care Journal)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-9, June-2020

विकास के आइने में वर्तमान

डॉ. भाऊसाहेब रा. नळे
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव. (महाराष्ट्र)

सारांश :

सामान्यत: जिन निष्कर्षों को सार्वत्रिक रूप में स्वीकृति मिल सकती है, उसी का शोध विज्ञान और उसकी प्रयोगशाला पर्यावरण है। भौतिक, रासायनिक एवं जौविक कारकों की समष्टिगत इकाईयों के समन्वय और संतुलन को हम पर्यावरण कहते है। इस प्रकार की पर्यावरणीय इकाई किसी भी जीवधारी अथवा परितंत्रिय आबादी को प्रभावित करने के साथ-साथ उसके अनुरूप जीवन और जीविता को तय करने की क्षमता अपने अंदर रखती है। विज्ञान उसी के बीच के प्रभाव और कार्यकारण संबंधों की खोज शास्त्रीय प्रमाणें के अधार पर निरंतर करता आ रहा है। जिसके अध्ययन का उद्देश मूलभूत ज्ञान की तलाश तथा उसके व्यवहारिक उपयोजन तक सीमित न होकर पर्यावरण पूरक नई जीवन दृष्टि, मानवीय वृत्ति और विश्व की ओर देखने का नया दृष्टिकोण विकसित करने के साथ जुड़ा है। लेकिन आज मानवी समुदाय में वौज्ञानिक ज्ञान के व्यवहारिक प्रयोग की प्रवृत्ति लगातार प्रबल होती जा रही है। यही वौज्ञानिक ज्ञान का व्यवहारिक पक्ष प्रौद्योगिकी कहलाया जाता है। आज इस प्रकार की प्रौद्योगिकी ने पृक्रति, पर्यावरण और जौव-विविधता के अस्तित्व को ही चुनौतियाँ देना शुरू किया है। उन चुनौतियों को लेकर विश्व वौज्ञानिक और चिंतकों ने निरंतर अपने विचार प्रकट किए है। उन मतों का अध्ययन करना और किसी एक नतिजे तक पहुँचना इस शोध लेख का उद्देश्य है।

Copyright©authors

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-9, June-2020

मूल शब्द : प्रदुषण, जलवायु परिवर्तन, नौनो प्रौद्योगिकी, शरीर विज्ञान।

प्रस्तावना :

आज सभी समस्याओं के लिए विज्ञान-प्रौद्याेगिकी को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। लेकिन हमें याद रखना होगा कि, कुछ चालाक लोगों द्वारा अपने आपको उन समस्याओं की जिम्मेदरियों से मुक्त रखने के लिए समाज में जानबूझकर इस प्रकार का मुँहावरा गढाया जा रहा है। क्योंकि विज्ञान-प्रौद्योगिकी न नौतिक होती है, न अनौतिक। उसके सारे परिणाम उसकी खोज और प्रयोग करनेवाले तथा उसका व्यवहारिक उपयोग करनेवाले व्यक्तियों की मानसिकता पर निर्भर करते है। आज वौज्ञानिक खोज और उसका व्यवहारिक उपयोग करनेवाले लोगों की मानसिकता लाभ और मुनाफा (बाजारवादी मूल्य) कमाने की हो गई है। उस मानसिकता की देन के रूप में आज के औद्योगिक समाज, भोगविलासी सभ्यता और संस्कृति को हम देख सकते है। आज इसके चलते विज्ञान-प्रौद्योगिकी से विकसित संसाधनकेंद्रित अर्थव्यवस्था और वौज्ञानिक समाज के बीच नए अनुबंध निर्माण होने लगे है। जिसकी ओर संकेत करते हुए अर्न्स्ट फ्रेड्रिक शुखमार ने अपने स्मॉल इज ब्युटिफुल : ए स्टडी ऑफ एकॉनॉमिक्स अँज इफ पीपल म्ॲटर्ड में लिखा है- "आधुनिक प्रौद्योगिकी केवल धनिक लोगों के लिए है। उसको आदर्शवाद से कुछ लेना-देना नहीं है। संपूर्ण विश्व पर वर्चस्व स्थापित करनेवाली प्रौद्याेगिकी ही सभी सामाजिक समस्याओं की जड है। अर्थकेंद्रित प्रौद्योगिकी की वजह से बेरोजगारी में बढोत्तरी, संपत्ति का केंद्रिकरण हो रहा है। मुट्ठीभर लोग ही उत्पादन और सेवा के क्षेत्र में उतर रहे है।"[1] आज इन लोगों की मानसिकता ने केवल सामाजिक समस्याओं को ही नहीं तो पर्यावरण प्रदुषण (जल, जमीन और हवा), जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) और जौव-विविधता के संरक्षण (रासायनिक प्रदुषण) जौसी समस्याओं को भी गंभीर और उग्र बनाना शुरू किया है।

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-9, June-2020

आज उनके प्रयास से ही विज्ञान-प्रौद्योगिकी और पर्यावरण के बीच एकता, अखण्डता, सार्वत्रिकता, संपन्नता, समता, न्याय, उदारता, निरपेक्षता, अहिंसावाले तत्वों ने विस्फोट करना शुरू किया है। हमें याद रखना होगा कि, संसार में देश अनेक है किन्तु प्रकृति एक है तथा प्रकृति-पर्यावरण और जीव-सृष्टि की आवश्यकता हमें है, उन्हें हमारी नहीं। इस कारण आज हमें प्रकृति, पर्यावरण और जीव-सृष्टि को केंद्र में रखते हुए हमारे विकास की परिभाषा, मानदण्ड, मूल्यांकन के तरिके और मूल्यतंत्र को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। वर्तमान में विशिष्ट लोगों के द्वारा देश और समाज की प्रगति, उन्नति, विकास, आत्मनिर्भरता, सुरक्षा और देश को महासत्ताक बनने के नाम पर विज्ञान-प्रौद्योगिकी और उसके संसाधनों को फैलाने की अनिवार्यता पर लगातार बल दिया जा रहा है। उसके सहारे छोटे-मोटे उद्योग, व्यावसाय और पायलट प्लान राष्ट्रीय संपत्ति के सहारे खडे किए जा रहे है। उसके प्रकृति-पर्यावरण पर होनवाले परिणामों पर कोई चिंतन मंथान करता दिखाई नहीं देता। आज ऐसे उद्योग व्यावसाय और कलकारखानों से निकलनेवाली धूल, धुवाँ, जहरीली गौस ने एक तरफ हवा को प्रदुषित करना शुरू किया है तो दुसरी ओर उनके द्वारा होनेवाले रासायनिक रिसाव, रायनिक पदार्थ, रसायन मिश्रीत पानी, रासायनिक खाद, कीटनाशी औषधि आदि ने (पेस्टिसाईड प्रदुषण) पीने योग्य पानी के स्त्रोत और जमींन की उत्पादन क्षमता को नष्ट करना शुरू किया है। जिसकी वजह से आज पकृति, पर्यावरण की समस्याओं के साथ जीव-सष्टि (जौव-विविधता) की प्रजनन क्षमता, स्वास्थ्य-सुरक्षा और उनके अस्तित्व की समस्याऐं गहरी बनती जा रही है।

एक ओर विश्व वौज्ञानिक प्राकृतिक नियमों को चुनौतियाँ देते हुए उसपर विजय पाने के लिए ललायित हो रहे है तो दुसरी ओर उत्पादन और सेवा के क्षेत्र में कार्यरत लोग विलासिता का साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण पर ही हमला करने लगे है। दोनों तरफ से प्रकृति, पर्यावरण और जौव-विविधता के अस्तित्व पर ही हमला होने लगा है।

CopyrightOauthors

Scanned by TapScanner

Scanned with OKEN Scanner

इसकी ओर संकेत करते हुए शुकदेव प्रसाद लिखते है- "मानव सभ्य हो या बर्बर, प्रकृति की संतान है, उसका स्वामी नहीं। यदि उसे अपने पर्यावरण पर प्रभुत्व बनाए रखना है तो उसके लिए कतिपय प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलना आवश्यक है। वह जब प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करता है तभी वह उस प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट कर बौठता है, जिसपर उसका जीवन निर्भर करता है और जब उसका पर्यावरण तेजी से बीगडने लगता है तब उसकी सभ्यता का पतन भी होने लगता है।"[02] वर्तमान का परिदृश्य इसकी ओर ही संकेत करता है। समय रहते हमें संभलना चाहिए नहीं तो आनेवाला कल हमें कभी माफ नहीं कर सकता।

यहाँ तक तो ठीक है, लेकिन उन समस्याओं को दूर करने के लिए फिर नए उद्योग व्यावसाय और कलकारखानों को खडा करना कहाँ तक उचित है? उपर से उनके इस प्रयास से नौसर्गिक साधन संपत्ति का संकट भी गहरा बनता जा है। लेकिन देश तथा वौश्विक राजनीति और उद्योगनीति के मूल में अर्थकारण आ जाने के कारण लगभग सभी देशों में कम अधिक मात्रा में यह सब होता हुआ हमें देखने के लिए मिलता है। आज अपने अस्तित्व को बनाए रखने तथा दौड में सबसे आगे रहने के लिए उनके द्वारा की जानेवाली तिकडमबाजी ने सबकुछ चौपट करना शुरू किया है। इस पर वौज्ञानिक, समाज सुधारक और विशेषज्ञ चिंतन और मंथन करते हुए त्रस्तकारक भविष्य की ओर संकेत बार बार करने लगे है। लेकिन उनके संशोधन और आवाज को बाजारवादी शक्तियाँ दबाने लगी है। उनकी आवाज को सभा, सेमिनार तक ही सीमित रखने लगी है। वरिष्ठ वौज्ञानिक तथा विज्ञानकथाकार डॉ. जयंत विष्णू नारलीकर अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति करते हुए हिमप्रलय में लिखते है - "उन दिनों धर्म के ठेकेदार थे अब विज्ञान के ठेकेदारों ने उनकी जगह ली है। ये ऊँचे पदों पर बौठे प्रतिष्ठित वौज्ञानिक ही तय करते है कि क्या छापना चाहिए, क्या विज्ञान है और किसे छापने की बजाय अंधेरे में ही रहना चाहिए। पांच सदियों पहले के धर्म के ठेकेदारों की भूमिका अब ये आधुनिक वौज्ञानिक निभा रहे है।"[03] इसके

Scanned by TapScanner

Scanned with OKEN Scanner

चलते मौलिक अनुसंधान करनेवाले वैज्ञानिकों की आवाज अकेले कंठ की पुकार बनकर रहने लगी है। उनके सुझावों कोठे जमीन पर लाने तथा उसके कार्यान्वयन के लिए न तो व्यापक योजना बनाई जा रही है, न कोई पायलट प्लान। केवल उसका अभास निर्माण करके खुलेआम भूखे और नंगे लोगों के हिस्से की चोरी की जा रही है, वह तो अलग ही बात है।

आज ग्लोबल वार्मिंग अर्थात जलवायु परिवर्तन समुचे विश्व के चिंता का विषय बन गया है। उद्योग व्यावसाय, हरितग्रह, शीतग्रह, वातानुकूलित यंत्र आदि से निकलनेवाली गौस, परमानु परिक्षण तथा विस्फोट से निकलनेवाले विकिरण और धुवाँ, नाभिकीय प्रक्रिया से उत्पन्न उच्छिष्ट पदार्थ, रासायनिक कूडा कचरा और रसायन मिश्रित पानी, कोयला, इंधन और गौस आदि के ज्वलन से वातावरण में कार्बनडाय ऑक्साईड, सल्फरडाय ऑक्साईड, नायट्रोजन ऑक्साईड की पर्त जमकर भूपृष्ठ का तापमान लगातार बढाने लगा है। उपर से अंतरराष्ट्रीय सीमा सुरक्षा के नाम पर, तेल के खदानों पर तथा दहशतवादी और आतंकवादियों के द्वारा लगातार होनेवाली बमबारी और स्फोटकों के प्रयोग ने भी अपना योगदान देना शुरू किया है। जिसकी वजह से पर्यावरण (मौसम का चक्र) के चक्र में काफी हद तक गडबी हो गई है। उनके प्रयास से आनेवाली आंधी-तुफान, अतिवृष्टि - अकाल, हिमप्रलय, महामारी और तरह तरह की बिमारीयों की शिकार संपूर्ण जाँव-विविधता हो रही है। लालच बूरी बला है, इसका प्रत्यय सबको आने लगा है। लेकिन उसे नियंत्रित कोई नहीं करना चाहता। आवश्यकता (जरूरत) और विलासिता के बीच की सीमा धूसर होने के कारण प्रकृति का चीर हरण होने लगा है। आजादी के बाद म. गांधी ने देश में फैलती प्रौद्योगिकी और मानवी प्रवृत्ति को देखते हुए चेतावनी दी थी - "प्रकृति ने मनुष्य की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए काफी कुछ दिया है, लेकिन उसके लालच को पूरा करने के लिए नहीं।"[७४] लेकिन किसीने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। परिणामतः आज हमें एक नहीं हजार समस्याओं के साथ संघर्ष करना पड रहा है। इन समस्याओं को सुलझाने में ही सभी देशों का

Scanned by TapScanner

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-9, June-2020

अधिकांश धन खर्च होने लगा है। आज हमें इसके बचाव के लिए योजना बनाने तथा उसपर अमल करने के लिए व्यापक कार्यक्रम के आयोजन की आवश्यकता है।

आज चिकित्सा के क्षेत्र मे शरीर विज्ञान (फिजीओलॉजी) और अनुवांशिक अभियांत्रिकी विज्ञान (जेनेटिक इंजिनीअरिंग) के अंतर्गत मानवी शरीर और मानवी दिमाग आदि की रचना और उसके बीच के कार्यकारण संबंधों लेकर सुक्ष्म अध्ययन किया जा रहा है। जिनमें जीव बैंक, क्लोनिंग, ट्रान्यजेनिक बीज, मस्तिष्क प्रत्यारोपण, मानवी क्लोन, लिंग निर्धारण, स्मृति के प्रत्यारोपण, हिमीकरण, मानवी अंगों को विकसित करना आदि विधि को लेकर खोज की जा रही है। जब वैज्ञानिकों को इसमें सफलता मिलेगी, तब क्या होगा? गाडी की तरह मनुष्य को पुरी तरह से रिपेअर करते हुए मृत्यु पर विजय पाने का प्रयास मानवता को कहाँ ले जा सकता है? मनुष्य के मूल रूप, स्वरूप, गुण और वृत्ति का क्या होगा? वर्तमान जीवन की त्रासदी, जानलेवा संघर्ष, नौराश्य, अभावग्रस्तता आदि से परेशान होकर मानव आत्महत्या करने लगे है। मिला हुआ जीवन जीना दुभर हो गया है। ऐसे में उम्र बढाने के लिए किया जानेवाला अनुसंधान कितना लाभदायी होगा? इसपर सोचने की बजाए विश्व वैज्ञानिक पद, पैसा, प्रसिध्दी और पुरस्कार (नोबल) पाने के लिए प्रयोगशाला में अपना जीवन बिताने लगे है। वर्तमान परिस्थिति और वैज्ञानिकों के द्वारा किए जानेवाले अनुसंधानों को देखते हुए प्रसिध्द हिंदी विज्ञान कथा लेखक मनीष मोहन गोरे अपनी कथा 325 साल का आदमी में लिखते है - "पर्यावरण प्रदूषण, जनसंख्या वृध्दि और नाभिकीय प्रतिस्पर्धा जैसी विकराल समस्याओं को देखते हुए मुझे विश्व विनाश की संभावना निकट भविष्य में दिख रही है। इस लिए मेरे हृदय में अब और बुरे दिन देखने की इच्छा नहीं रह गयी है। अमरत्व की औषधी के असर से प्राकृतिक मौत तो मुझे आनेवाली नहीं है, मगर जीवित रहकर प्रकृति की संहार लीला और नाभिकीय युध्द की आशंकाओं के बीच हर रोज मरने से मेरा आत्महत्या कर लेना ही बेहतर है।"[05] आज तक की खोजों ने जनमदर में

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-9, June-2020

वृध्दि और मृत्युदर में गिरावट लाने का कार्य किया है। जिसकी वजह से समुचा विश्व अनलिमिटेड पापुलेशन अर्थात जनसंख्या वृध्दि का शिकार बनता जा रहा है। इसने ही हमारे विकास की गति को धीमी करते हुए खाद्यान्न की समस्या को उग्र बनाना शुरू किया है। आज हमारे ग्रहकलह, आतंकवाद और दहशतवाद का यही कारण बनता जा रहा है। इसने हमारे देश की ही नहीं तो समुचे विश्व की इकोनॉमी और इकोलॉजी को पूरी तरह से प्रभावित किया है।

आज टेलिकम्न्यूनिकेशन अर्थात संचार के क्षेत्र में विकसित होनेवाली नौनो प्रौद्योगिकी ने विश्वमानव के अचार, विचार और व्यवहार को काफी हद तक प्रभावित किया है। इसके पीछे एक बहोत बडी शक्ति है, जो बौध्दिक क्रांति के नाम पर देश तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुलाम और गुलामी की मानसिकता को फैलाने लगी है। सामान्य लोगों की संवेदना, बौध्दिक क्षमता, विवेक और कार्यकुशलता को मारकर माटी के पुतलों में तब्दिल करने लगी है। इंटरनेट, मोबाईल, कम्प्यूटर और नव-इलेक्टॉनिक माध्यमों के द्वारा अभासी और क्रत्रिम दुनिया के जाल में इस तरह उलझाने लगी है कि, हम उसको ही सही मानकर अपने वर्तमान को बिगाडते, रौंदते हुए आगे बढने लगे है। आज की युवा पीढी में आनेवाली दायित्वहिनता, कर्तव्यहिनता, मूल्यहिनता, निष्क्रियता, विलासिता, बेफिक्री आदि आने के कारण किसकी ओर दिशा-निर्देश करते है। आज इन साधनों के सहारे सुंदरता, मादकता, विविधता, आक्रमकता, तार्किकता, आकर्षकता और आवश्यकता के जाल बुनकर देश के युवा को हिप्नोटाईज किया जा रहा है। उस दुनिया को हकिकत में उतारने केलिए वे, किसी भी हद तक जाने लगे है। जिसके चलते क्रुरता, पाश्विकता, अनाचार, स्वौराचार ही फैलने लगा है। उनमें हिंसा का भाव बढने लगा है। परामर्श केंद्र उसके परिणाम स्वरूप आज हमें खोलने पड रहे है। आज हम धुम्रपाण की सभी वस्तु और उत्पादनों पर चेतावनी देने लगे है कि, इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। कल हमें

CopyrightOauthors

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-9, June-2020

टेलिकम्यूनिकेशन अर्थात संचार से जुड़े उत्पादनों को लेकर चेतावनी देनी पडेगी कि, इन उत्पादनों का आधिक प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

निष्कर्ष :

कूल मिलाकर हम कह सकते है कि, आज हमें समाज के सभी स्तरों के लोगों (कमजोर वर्ग और स्त्रियों के लिए भी) के लिए विज्ञान-प्रौद्योगिकी के सहारे रोजगार विकसित करने, उसके इस्तेमाल की दक्षता और क्षमताओं को विकसित करने, उत्पादन बढाने, परम्परागत उर्जा की मांग को घटाने, व्यर्थ पदार्थों को पुन:चक्रित करने एवं उत्पादकों का पुर्ण उपयोग में लाने की दिशा में अनुसंधान करने तथा लोगों को उत्साहित करने की दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। आज हमें पर्यावरण पूरक नई जीवन दृष्टि, मानवीय वृत्ति और विश्व की ओर देखने का नया दृष्टिकोण विकसित करना होगा। जो आनेवाले दिनों में प्रकृति, पर्यावरण और जीव-विविधता को सुरक्षित कर सकता है। उनके बीच समन्वय और संतुलन स्थापित करने के लिए हमारे विकास के मानदण्डों निर्धारित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

01. अतुल देउळगावकर, स्वमीनाथ भूक मुक्तीचा ध्यास, प्रथम आवृत्ती - 21 नोव्हेंबर, 2000. पृ. क्र. 103.

02. शुक्देव प्रसाद, उर्जा संसाधनों की खोज में, संस्करण- 2011. पृ. क्र. 117.

03. बाळ फोंडके, बीता हुआ भविष्य (विज्ञान कथा संग्रह), छटी आवृत्ति- 2013. पृ. क्र. 09.

04. के. वि. गोपाल कृष्ण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का मानव जाती पर प्रभाव, अनुवादक- विनीता सिंघल, प्रथम संस्करण - 2015. पृ. क्र. 114.

05. मनीष मोहन गोरे, 325 साल का आदमी (विज्ञान-कथा संग्रह), प्रथम संस्करण- 2006. पृ. क्र. 87.

Copyright@authors

144

Scanned by TapScanner

Scanned with OKEN Scanner

ISSN NO: 2249-6661(PRINT)

2020
2021

SAMBODHI

A Quarterly Peer Reviewed, Refereed Research Journal
Vol-43 No.04(XIX) October - December 2020
UGC Care Listed Journal

L.D. INSTITUTE OF INDOLOGY

Scanned by TapScanner

Scanned with OKEN Scanner

Editorial Board

Editor in Chief

Dr. J. B. Shah

Editor, Sambodhi, ISSN : 2249-6661

Executive Editors

Dr. Prolay Mondal, Raiganj University, Uttar Dinajpur, West Bengal, India

Mr. Sandeep Talluri, Acharya Nagarjuna University, Guntur, Andhra Pradesh, India

Associate Editors

Dr. Hiral Kumar M, College of Education, Dabho, Vadodara, Gujarat, India

Dr. Anshul Bajpai, Yobe State University, Damaturu, Nigeria

Dr. Abhijit Sahoo, Kalinga Institute of Social Sciences (KISS), Bhubaneswar, Odisha, India

Dr. Satendra Kumar Mishra, Amity University, Lucknow, India

Dr. Manzoor Khan Afridi, International Islamic University, Islamabad, Pakistan

Editorial Review Penal

M. Ramesh
Dr. Deepak Singh
Dr. Amit Bubna
Dr. Ravi Shankar Rai
Jatinder Kumar Jha
Mohammed Shahi Abdulla
Pragyan Rath
Dr. Tirupati Mishar
Dr. Raj Patel
Dr. Kishore Datta
P. S. Dhawan
Avnish G Mulky
Dr. Apoorav Bhardwaj
Dr. Shekh Abdullah
Deepak Kumar Sinha
Dr. P. H. Patel
Dr. K. S. Sudhir
Dr. Neelam Rai
Jayant R kale
Dr. Rakesh Mishra
Sanjit Sengupta

Copyright © All Rights Reserved with L.D. Institute of Indology

All rights reserved, No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means of electronic or mechanical including photocopy, recording or any information stored in a retrieval system, without the prior written permission of the author and publisher.

The responsibility for the facts or opinions expressed in the book is entirely of the authors. Neither the Editors nor the publisher is responsible for the same.

(This is Refereed Journal and all articles are professionally screened and reviewed)

Published By : Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology, Ahmedabad
editorsambohi.ugcjournal@gmail.com

Editorial Office: 120 Feet Ring Rd, University Area, Ahmedabad, Gujarat, India
Printed By : Saha Publications Pvt. Ltd.

Office: M-194, Ground Floor, Century Market, Barakhamba Road, New Delhi, India.

Scanned by TapScanner

Scanned with OKEN Scanner

INDEX

S.No	TITLE	Page No
1	THE ROLE OF E-GOVERNANCE IN EDUCATION IN MALAWI	1
2	KNOWLEDGE MANAGEMENT AND ORGANIZATIONAL COMPETITIVENESS	8
3	IMPACT OF MANAGEMENT STYLES ON PRODUCTIVITY OF PUBLIC ADMINISTRATION (A STUDY OF SAMANGAN PROVINCE)	15
4	A CASE STUDY OF DELHI GOVERNMENT TO DRAFT THE POLICY OF PRIVATE HOSPITAL AND SOME OF THE ISSUE FACED BY PATIENTS	26
5	WE MATTER TOO: ONLINE PRIMARY SCHOOL EDUCATION INEQUALITIES IN MALAWI DURING THE COVID 19 PANDEMIC	31
6	HISTORICAL REVIEW OF FLOODS IN KASHMIR VALLEY AND THEIR IMPACT	36
7	AN INTRODUCTION TO THE BASIC ANALOGUES OF FRACTIONAL DERIVATIVES USING CLASSICAL FUNCTIONS	40
8	PHYTOCHEMICALS FOR TREATMENT OF CANCERS	43
9	*AKKARMASHI:* A SAGA OF EXISTENTIAL FEARS OF AN OUTCAST	47
10	राम काव्य और राम भक्ति : परम्परा और स्वरूप	52
11	FEMINISM AND EDUCATION	56
12	FILIAL RELATIONSHIPS IN GLOBALIZED WORLD: GIRISH KARNAD'S WEDDING ALBUM	60
13	EFFECTIVENESS OF PUBLIC EXPENDITURE AND HEALTH OUTCOMES IN BIHAR	63
14	EVALUATION OF *DIDYMOCARPUS PEDICELLATA* ANDDAPAGLIFLOZIN COMBINATION FOR THE TREATMENT OF TYPE 2DIABETES AND ITS CARDIOVASCULAR COMPLICATIONS IN EXPERIMENTAL ANIMALS	74
15	FAMILY CRISIS IN VIJAY TENDULKAR'S *SILENCE! THE COURT IS IN SESSION* AND MAHESH DATTANI'S*THIRTY DAYS IN SEPTEMBER*	83
16	EXPECTED PROFIT OF AN EOQ INVENTORY MODEL WITH INFERIOR WORTH PRODUCTS	89
17	PULL FACTORS OF MIGRATION: - A STUDY AMONG CONSTRUCTION WORKERS IN KERALA	94
18	AWARENESS ON LEGAL RIGHTS OF RURAL WOMEN: AN APPRAISAL	99
19	A STUDY ON FINANCIAL PERFORMANCE ANALYSIS OF JSW STEEL LIMITED	106

Scanned by TapScanner

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2249-6661
Vol-43No.-04 (XIX) October-December (2020)

राम काव्य और राम भक्ति : परम्परा और स्वरूप

डॉ. भाऊसाहेब रा. नळे
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सुंदरराव मोळके महाविद्यालय, माजलगाव. (महाराष्ट्र)

सारांश :

प्रस्तुत शोध लेख राम भक्ति काव्य की लंबी परम्परा और उसके चलते राम भक्ति के स्वरूप में आए हुए बदलावों पर अधारित है। वैसे देखा जाए तो हमें राम काव्य परम्परा का आरंभ प्राचीन काल में लिखे वेद, उपनिषद, पुराण, बौध्द जातक कथा और जैन साहित्यों में नामोल्लेख से होता हुआ दिखाई देता है किन्तु वाल्मीकि के रामायण में कही राम कथा ने जनमानस में राम के प्रति बढ़ती जिज्ञासा को तृप्त करते हुए लोगों को राम भक्ति के साथ जोडने का सफल प्रयास किया। एक प्रकार से कहें तो उन्होंने राम काव्य के माध्यम से राम भक्ति परम्परा की नींव ही डाली। जिसपर महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना के माध्यम से कलश चढाने का महान कार्य किया। इन्होंने राम को ईश्वरीय अवतार में प्रस्तुत करते हुए राम काव्य और राम भक्ति की परम्परा को जनमानस में स्थापित करने का कार्य किया है। इस कारण वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास कृत रामचरित मानस का प्रभाव लगभग सभी परवर्तीत भारतीय राम काव्य लेखन और राम भक्ति की परम्पराओं पर कम अधिक मात्रा में हमें दिखाई देता है। उन सभी के लेखन की परम्परा और राम के बदलते स्वरूप को जानने समझने का प्रयास इस शोध लेखन का उद्देश है।

कुट शब्द : प्राचीनकाल, आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिककाल।

प्रस्तावना :

राम काव्य और राम भक्ति से हमारा तात्पर्य उन कवियों एवं काव्यों से है, जिन्होंने राम कथा को अपने काव्य का विषय बनाकर भारतीय जनमानस के रग रग में राम भक्ति को प्रवाहित किया। इस दृष्टि से देखा जाए तो राम काव्य परम्परा में वाल्मीकि को आदि कवि तथा उनकी रामायण को आदि काव्य माना जाता है। शायद उनके पूर्व से रामकथा की परम्परा शुरू रही होगी, किन्तु उसके लिखित प्रमाण हमें प्राप्त नहीं होते। लेकिन उसके होने का आभास जनश्रुति और मिथकों में उल्लेखित राम और सीता के चरित्र से जरूर मिलता है। इसके साथ ही चित्रकला और अभिनयकला में भी राम कथा प्रचलित होने के सुत्र देखने के लिए मिलते है। जिसके चलते रामकथा में वैविध्य का पुट हमें देखने के लिए मिलता है। यह वैविध्य राम का स्वरूप (सगुण और निर्गुण) और भावानुभूतियों में दिखाई देता है। जिसको देखते हुए स्वयं तुलसीदासने भी कहा था- 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता'। आगे चलकर राम कथा रचियताओं ने निर्गुण की अपेक्षा सगुण राम में विस्तार की अधिक संभावनाओं को देखा। जिसके चलते राम का पुरूषोत्तम रूप या अवतारी रूप राम कथा की मुख्य धारा में आ गया। इस प्रकार की परिपाठी का शुभारंभ वाल्मीकि के रामायण और तुलसीदास कृत रामचरित मानस से शुरू होता हुआ हम तक पहुँचता है।

रामकथा का सर्वप्रथम बृहत काव्यगुण सम्पन्न, सुगठीत और क्रमबध्द पाठ वाल्मीकि रामायण में होने के कारण उन्हें राम के समकालीन भी माना जाता है। वाल्मीकि रामायण की कथा महाभारत में भी अनेक प्रसंगों में वर्णित है। लेकिन हमें याद रखना होगा कि, वाल्मीकि रामायण में राम अलौकिक (निर्गुण) महापुरूष के रूप में तथा महाभारत में लौकिक (सगुण) रूप अर्थात अवतारी पुरूष के रूप में हमारे सामने आते है। साथ ही अगस्त संहिता, राघवीय संहिता, रामपूर्व तापनीय उपनिषद, रामोत्तर तापनीय उपनिषद, रामरहस्योपनिषद जैसे ग्रंथों में राम कथा और राम भक्ति का सुत्रपात हमें देखने के लिए मिलता है। विष्णु-पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण और कुर्म पुराण में भी रामकथा के अंश सर्वाधिक वैविध्यपूर्ण दिखाई देते है। अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्भूत रामायण, राघवोल्लास आदि ग्रंथों में राम को लेकर धार्मिक एवं दार्शनिक व्याख्याएँ भी देखने के लिए मिलती है।

Copyright © 2020 Authors

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner

रामकथा के क्षुद्र अंश और संदर्भ बौद्ध साहित्य में भी हमें देखने के लिए मिलते है। बौद्धों ने राम को बोधिसत्व के रूप में स्वीकारते हुए अपने जातक साहित्य में स्थान दिया है। इस रूप में हम दशरथ जातक, अनामर्क जातक और दशरथ कथानम् को देख सकते है। लेकिन इन्होंने अपनी जातक कथाओं के माध्यम से राम के चरित्र और अन्य संदर्भों को विकृत ही किया है। उसमें राम, लक्ष्मण और सीता को भाई बहन के रूप में प्रस्तुत करते हुए सीता का राम के साथ विवाह लगाने जैसी घटनाओं को हम देख सकते है। कुल मिलाकर हम कह सकते है कि, बौध्दों ने राम कथा और राम भक्ति को फायदा कम नुक्सान ही जादा पहुँचाया है।

बौद्ध की अपेक्षा जैन कवि अधिक उदारमतवादी होने के कारण उनके ग्रंथों में रामकथा का वर्णन अपेक्षाकृत अधिक विस्तारपूर्वक देखने के लिए मिलता है। जैन परम्परा के अनुसार पहले विमलसूरी ने प्राकृत भाषा में पउमचरियम् (पद्मचरित) लिखा। जिसका आगे चलकर रविषेण और दौलतराम ने संस्कृत भाषा में अनुवाद किया है। तो स्वयंभू ने अपभ्रंश भाषा में इसी नाम से पउमचरियम् लिखा। जिसे हिंदी का प्रथम रामायण माना जाता है। इसके साथ गुणाढ¶ की वृहत्कथा, भुवन तुंग सूरि कृत सियाचरियम्, रामचरितम्, जिनसेन कृत आदिपुराण, गुणभद्र कृत उत्तरपुराण, हरिषेण कृत कथाकोष, पुष्पदंत कृत महापुराण में राम चरित के वर्णन मिलते है। जिसमें जैन धर्म की दार्शनिक एवं धार्मिक मान्यताओं की पृष्ठभूमि पर असाधारण शक्तियों से संपन्न महापुरूष के रूप में राम को पस्तुत किया है। इन ग्रंथों में वर्णित राम कथाओं का प्रभाव आगे चलकर तुलसीदास कृत रामचरित मानस पर भी हमें दिखाई देता है। ऐसा होने के बावजूद जैन धर्म की परिपुष्टि के लिए जैन कवियों ने अपने धर्म में प्रचलित मीथक कथाओं के सहारे कुछ संदर्भों में बदलाव किए है तो कुछ मार्मिक संदर्भों को छोड दिया है।

संस्कृत साहित्य में रामकथा को अधार बनाकर नाटक और महाकाव्यों की रचना व्यापक रूप में हुई है। जिसकी शरूवात वास्तविक रूप से वाल्मीकि कृत रामायण से होती है। भास रचित प्रतिमा नाटक और अभिषेक नाटक, कालिदास प्रणित महाकाव्य रघुवंश, प्रवरसेन का रावण-वध, भवभूति प्रणित महावीरचरित नाटक और उत्तररामचरित नाटक, अनंग हर्ष मातृराज रचित उदात्तराघव नाटक, कुमारदास प्रणीत जानकीहरण नाटक, अभिनंन्दन कृत रामचरित, क्षेमेंद्र की रामायणमंजरी, चूडामणि रचित प्रसन्नराघव नाटक, मुरारी रचित अनंगराघव नाटक, रामेश्वर का बालरामायण और हनुमान्नाटक, राजशेखर का बालरामायण, जयदेव का प्रसन्नराघव और मुरारी का आनंद राघव जैसी रचनाओं में रामकथा की लंबी परम्परा हमें देखने के लिए मिलती है। जिसमें रघुवंश की परम्परा, राम की वीरता, साहस, मर्यादा और उत्तम चरित्र के पुट दिखाई देते है। जिसके द्वारा रचनाकारों ने रामकथा को नवीन रूप देकर संवेदनशील और सहृदयी समाज निर्माण करने में अपना योगदान दिया है।

हिंदी साहित्य में राम काव्य का विवेचन तुलसी को ही मध्य में रखकर किया जाता है। तुलसी के पूर्व हिंदी भाषा में राम कथा को केंद्र में रखकर अधिक साहित्य लिखा नहीं है। फिर भी हिंदी भाषा में तुलसी के पहले चंदवरदाई की पृथ्वीराज रासो का नाम आवश्य लेना चाहिए। जिसमें चंदवरदाई ने अपनी पत्नी के खातिर क्यों न हो परब्रम्हा के विविध अवतारों का वर्णन किया है। गोस्वामी विष्णुदास ने वाल्मीकि रामायण का हिंदी में अनुवाद करते हुए हिंदी भाषी जनमानस को रामकथा और रामभक्ति के साथ जोडने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उत्तर भारत में राम भक्ति के प्रवर्तन का श्रेय संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित रामानंद को जाता है। रामरक्षा स्त्रोत उनकी महत्वपूर्ण रचना है। आगे चलकर उनके शिष्य कबीरदास ने उसको प्रसारित करने का महत्वपूर्ण काम किया है। कबीर के साथ उनके शिष्य रैदास, धन्ना, पीपा ने भी राम काव्य को आगे बढाया है। अग्रदास उर्फ अग्रअली तुलसी के समकालीन थे। वे दिन रात राम की ध्यानधारना में लीन रहते थे। उन्होंने ध्यानमंजरी, अष्टआयामी, रामभजनमंजरी, उपासना बावनी, हितोपदेश और पदावली में प्रसंगानुकूल राम का ऐश्वर्य रूप और उनकी लीलाओं का वर्णन किया है। ईश्वरदास की सत्यवती कथा, भरत मिलाप, अंगद पौज, विष्णुदास की महाभारत कथा, रूक्मिनी मंगल, स्वर्गारोहण, स्वर्गारोहण पर्व और स्नेहलीला में रामकथा वर्णन दिखाई देता है। तुलसी के समय में ही प्राणचंद चौहान ने रामायण महानाटक, हदयराम ने हानुतन्नाटक और नाभादास ने अष्टयाम और भक्तमाल की रचना की है। सूरदास ने सूरसागर में राम

Copyright © 2020 Authors

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner

कथा से संबंधित कुछ पदों की रचना की है। राम जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा उसमें सम्मीलित है।

तुलसीदास रामभक्ति काव्य परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि रहे है। वे वेद, पुराण, उपनिषद तथा विभिन्न दार्शनिक मतों के ज्ञाता थे। साथ ही जीवन में बहोत बडे बडे अघात भी उन्होंने सहे थे। जिसके बल पर उन्होंने प्रत्येक दृष्टि से रामचरितमानस को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया है। मानव व्यवहार के मार्मिक पक्षों का ऐसा विश्लेषण संसार के अन्य किसी ग्रंथों में पाना दुर्लभ है। मर्यादा, समन्वय तथा लोकमंगल की भावना का दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है। मानवीय मूल्यों, आदर्शों, पारिवारिक-सामाजिक, राजनीतिक आदर्शों की सौद्धांतिक और व्यवहारिक निष्पत्ति के लिए तुलसीदास ने महाकाव्य, खंडकाव्य और गीति काव्य का चयण किया है। जिसमें स्वांत सुखाय और लोकमंगल की भावना का उत्कट रूप हमें देखने के लिए मिलता है। तुलसी की बारह रचनाओं को प्रमाणिक माना जाता है। जिसमें रामलाल नहछू, रामाज्ञा प्रश्न, वैराग्य संदीपनी, पार्वती मंगल, गीतावली, बरवै रामायण, कृष्णगीतावली, दोहावली, कवितावली, विनय पत्रिका और रामचरित मानस का समावेश होता है। इन सभी रचनाओं के माध्यम से तुलसी ने रामकथा का विस्तार और रामभक्ति आन्दोलन की पताका को संपूर्ण भारत में फैलाया है।

तुलसी के परवर्ती कवियों में राम कथा पर काव्य लिखनेवालों में केशवदास का नाम सर्वोपरी है। इन्हें रीतिकाल का प्रर्वतक भी कहा जाता है। इनके द्वारा लिखी रामचंद्रिका में रामकथा तो है ही, लेकिन उसकी अभिव्यक्ति में साम्यक काव्यकला और काव्यशास्त्रीय ज्ञान का सौंदर्य भी देखने के लिए मिलता है। राम सीता का प्रेम, श्रंगार और नख-शिख वर्णन बिना किसी राग-लपेट के उन्होंने किया है। उनकी इस रचना पर रामचरित मानस, वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक और प्रसन्न राघव का प्रभाव देखने के लिए मिलता है। कवि रामनाथ ने जानकी अष्टयाम में जानकी की दिनचर्या का मार्मिक वर्णन किया है। कवि हरेफुल ने जानकी मंगल में जानकी के विवाह प्रसंग और तत्कालीन रस्मों का वर्णन किया है। श्रंगार वर्णन के परिप्रेक्ष्य में रूप वर्णन और नख-शिख वर्णन की परम्परा के सुत्रपात तो भक्तिकाल से ही शुरू हुए थे, लेकिन तुलसी की भक्ति-भावना के नीचे दबे रहे। रीतिकाल में श्रंगारीकता की भावना उचित वातावरण को पाकर विकसित होती गई। इसके संदर्भ में डॉ. प्रेमचंद माहेश्वरी का कथन धातव्य है - "उत्तर मध्य युग तक आते आते राम भक्तिभावना में से अध्यात्म का पक्ष विलुप्त हो गया और लौकिक श्रंगारिकता शेष रह गई। व्यक्तिवादी जीवन दर्शन, श्रंगारिकता, वैराग्य, अवैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वर्जनाओं एवं निषधों से आबाध्द दृष्टि उत्तर मध्ययुग की विशेषता है।"[01] संपूर्ण दरबारी वातावरण सुरा, सुंदरी और विलासिता के रंग में रंगा होने के कारण उसके छींटे रामकथा में भी हमें देखने के लिए मिलते है।

इसी कडी में हम परताप साहि कृत जानुकी की नख-शिख और युगल शिख-नख नामक रचनाओं में जानकी के सभी अंगों के सौंदर्य का वर्णन व्रज भाषा में किया है। कवि गोप कृत रामचंद्रभरण में रामकथा प्रसंगों का छन्दबध्द उपयोग किया है। सरदार कवि कृत रामभूषण दोहा छंद में लिखा है। जिसमें अलंकारों के लिए राम के यश और चरित के विभिन्न पक्षों का चयण किया है। वैष्णव कवि भगवानदास कृत रामरसायन छंद शास्त्र का ग्रंथ है। महाराजा विश्वनाथ सिंह रचित आनन्द रघुनन्दन नाटक, संगीतरघुनन्दन, आनन्द रामायण, रामचंद्र की सवारी नामक रचनाएँ भी उपलब्ध होती है। कवि सेनापति ने वाल्मीकि रामायण और तुलसी कृत रामचरित मानस का प्रभाव ग्रहण करते हुए कवित्त रामायण नामक रचना लिखी है। माधवदास चारण कृत अध्यात्मरामायण, रामरासो, हृदयराम कृत हनुमान्नटक, नरहरी बापट कृत पौरूषेम रामायण, लालादास कृत अवध विलास, परशुराम देव कृत दशावतार चरित, रघुनाथ चरित, माधवदास जगन्नाथी कृत रघुनाथ लीला जौसी रचनाओं को भी रामकाव्य परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान मिलता है। कूलमिलाकर हम कह सकते है कि, रीतिकालीन रामकथा और रामकाव्य में रसिकता और श्रंगारिकता का भाव प्रमुख रूप से हमें देखने के लिए मिलता है।

आधुनिक काल का रामकथा साहित्य बहुआयामी है। इस काल में अनेक विधाओं में रामकथा संबंधी विविधायामी लेखन हुआ है। रामचरित उपाध्याय की रामचरित चिंमामणि, रामनाथ ज्योतिषी की

Copyright © 2020 Authors

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner

श्रीराम चन्द्रोदय, राष्ट्रिय कवि मौथिलीशरण गुप्त का साकेत, पंचवटी, आयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध का वैदेही वनवास, बलदेव मिश्र का साकेत संत, बालकृष्ण शर्मा नवीन का उर्मिला, निराला की राम की शक्ति पूजा, नरेश मेहता कृत संशय की एक रात, केदार नाथ मिश्र कृत कैकयी, जगदिश् गुप्त की शम्बूक, बलदेव मिश्र की रामराज्य आदि रामकथा के मानक ग्रंथ माने जाते है। इन रचनाओं में रचनाकारों ने आधुनिक संदर्भों में रामकथा की चर्चा करते हुए उसके महत्व को अधोरेखित किया है। भक्तिकाल में तुलसी के राम मर्यादावदी थे, वे रीतिकाल तक आते आते लिला पुरूषोत्तम हो गए। वही राम आधुनिक काल में स्वतंत्रता के संग्राम में देशवासियों के रग रग में प्राण फुंकने लगे। वास्तविक रूप से दलित, उपेक्षित, वंचित और दबे कुचले वर्ग के नायक बन गए। इस संदर्भ में लल्लन प्रसाद व्यास ने अपने लेख में लिखा है- "समय परिवर्तीत हुआ और भारत के मुक्तिसंग्राम में राम पतीत पावन, लोकनायक मान्य हुए। स्वाधिनताकाल में राम आत्म चेतना के रूप में विराजमान है। वे पुरूषार्थी हैं और उनके इस रूप की अभिव्यक्ति पुरूषोत्तम राम नामक ग्रंथ में हुई है। राम काव्य ने न्याय के दिग्विजय के लिए चतुर्दिक यात्रा की है।"[02] इस काल की रामकथाओं की तीन प्रमुख विशेषताएँ दिखाई देती है। एक, इन कथाओं में अवतारवाद को कम महत्व दिया है। राम का मानवीकरण देखने के लिए मिलता है। दोन, रामकथा में भक्तिकालीन धार्मिक भावना और रीतिकालीन श्रृंगारिकता के स्थान पर नवीन सामाजिक तथा राजनीतिक आदर्श प्रस्तुत किए है। तीन, पूर्ववर्ती रामकाव्य के उपेक्षित पात्रों को नायक, नायिका के रूप में प्रस्तुत करने पर बल दिया है। जिसमें मानवीय चिंतन के नए आयाम हमें देखने के लिए मिलते है।

निष्कर्ष :

रामकथा की लंबी परम्परा चलती आ रही है। जिसका आरंभ वेद, उपनिषद, महाभारत, संहिता और नाथ तथा बौद्ध साहित्य में उल्लेखित पात्र और कुछ कथा-सुत्र से होता है तथा हिंदी भाषा में लिखी रामकथा का प्रेरणा स्त्रोत वाल्मीकि रामायण और तुलसी का रामचरित मानस रहा है। पूर्व मध्यकालीन हिंदी रामकथा साहित्य पर तुलसीदास का एक प्रकार से एकाधिकार होने के कारण श्रृंगारिकता की भावना दबी की दबी रह गई। जो उचित वातावरण को पाकर उत्तर मध्यकाल में श्रृंगारीकता के रंग में रंगती गई। रीतिबध्द, रीतिसिध्द और रीतिमुक्तक काव्य के रचियताओं में इस तरह की श्रंगारिकता रामकथा में देखने के लिए मिलती है। आधुनिक काल में नए संदर्भों के अनुसार रामकथा को यथार्थ की भाव-भूमि पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

संदर्भ-ग्रंथ :

01. डॉ. प्रेमचंद माहेश्वरी, हिंदी रामकथा का स्वरूप और विकास, पृ. क्र. 53.
02. लल्लन प्रसाद व्यास, रामकथा की दिव्य विजय यात्रा, कादंबिनी पत्रिका, अक्तुबर 1973, पृ. क्र. 80.

सहायक ग्रंथ :

1. प्रो. रामकिशोर शर्मा, हिंदी विषय में उच्च शिक्षा संकाय के लिए शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या पाठ¶क्रम, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, (अर्पित) 2019, ई-पाठ¶ सामग्री।
2. प्रो. रामकिशोर शर्मा, हिंदी साहित्य का समग्र इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. डॉ. माधव सोनटक्के, हिंदी साहित्य का इतिहास, विकास प्रकाशन, कानपपुर।
4. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबौक्स, नौएडा।

Copyright © 2020 Authors

Scanned by TapScanner
Scanned with OKEN Scanner